यथा- आयुष्यं चिरंजीवितं वा रामस्य रामाय वा स्यात् (राम चिरंजीवी हों)।

नृपस्य नृपाय वा मद्रं, भद्रं, कुशलं वा भूयात् ।

कृते (के लिए), समक्षम् (सामने , मध्ये, अन्तरे, अन्तः) के साथ षष्ठी होती है,

यथा-अमीषां प्राणिनां कृते (इन जीवों के लिए)।

राज्ञः समक्षमेव (राजा के ही सामने)।

बालानां मध्ये,

गृहस्य अन्तः अन्तरे वा।

षष्ठी चानादरे

जिसका अनादर (तिरस्कार) करके कोई कार्य किया जाता है उसमें षष्ठी या सप्तमी होती है,

यथा-

रुदतः शिशोः, रुदति वा शिशौ माता बहिरगच्छत् (रोते हुए बच्चे की माता बाहर चली गयी)।

निवारयतोऽपि पितुः निवारयत्यपि पितरि वा सः अध्ययनं त्यक्तवान् (पिता के मना करने पर भी उसने पढ़ना छोड़ दिया।)

तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्

बराबर, समान या "की तरह ' अर्थवाची तुल्य, सदृश, सम, सकाश, आदि शब्दों के योग में वह शब्द तृतीया या षष्ठी में रखा जाता है जिससे किसी की तुलना की जाती है,

यथा-

कृष्णस्य कृष्णेन वा समः तुल्यः सदृशः।

नायं मया मम वा समं पराक्रमं बिभर्ति ।

योग्य, उचित, अनुरूप, उपयुक्त अर्थवाची विशेषणों के साथ प्रायः षष्ठी होती है,

यथा-सखे पुण्डरीक, नैतदनुरूपं भवतः (मित्र पुंडरीक यह तुम्हारे योग्य नहीं है)।

अनु + √कृ का अर्थ जब नकल करना या मिलना जुलना होता है, तब इसके कर्म में प्रायः षष्ठी होती है,

यथा-ततोऽनुकुर्यात् तस्याः स्मितस्य । (तब कदाचित् यह उसकी मुस्कराहट से मिल जुल जाय।)

सर्वाभिरन्याभिः कलाभिरनुचकार तं वैशंपायनः (अन्य सभी कलाओं में वैशंपायन उससे मिलता जुलता था)।

क्तस्य च वर्तमाने

जब क्तप्रत्ययान्त शब्द (जो भूतकाल का वाचक है) वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होता है तब षष्ठी होती है, यथा- अहमेव मतो महीपतेः (राजा मुझे ही मानते हैं।)

राज्ञः पूजितः, मतः वा (राजा पूजते हैं, मानते हैं।)

यहाँ वर्तमान के अर्थ में क्त प्रत्यय है, इसका अर्थ हुआ-राजा पूजयति मन्यते वा।

परन्तु जब भूतकाल विवक्षित होता है तब केवल तृतीया आती है,

यथा - न खलु विदितास्ते चाणक्यहतकेन (क्या दुष्ट चाणक्य द्वारा उन लोगों का पता नहीं लगा दिया गया !)